ओमशांति। बच्चों ने गीत सुना और बुद्धि में बैठा। साजन कहो या बाप कहो। उनको पतियों का पति (क्यों) कहा जाता है? अंग्रेजी में ब्राइड्स भी कहते हैं। साजन को ब्राइडग्रुम कहते हैं। वह है निराकारी साजन। यहाँ साकारी साजन की कोई बात नहीं। निराकार साजन को भी सजनी तो ज़रूर चाहिए, नहीं तो निराकार साजन, सजनी बिगर रचना कैसे रचे! बच्चे जानते हैं, वह निराकार किस सजनी द्वारा रचना रचते हैं। बच्चे अच्छी रीति जानते हैं, वह प०पि०प० इसमें प्रवेश कर सबको जगाए रहे हैं। नवयुग कहा जाता है सतयुग को। पुराना युग कहा जाता कलहयुग को। तुम बच्चों को अनुभव हो रहा है, बरोबर नवयुग अर्थात् सतयुग, सचखण्ड में जाने लिए हम यहाँ आए हैं ज्ञान सागर पास रिफ्रेश होने, सन्मुख धारणा करने। तुम बच्चों को सन्मुख में जितना मज़ा आता है उतना ..... सेन्टर्स वालों को मुरली पढ़ने से इतना मज़ा न आवेगा। तुम बच्चे अब सन्मुख हो और सेन्टर्स वाले दूर हैं। याद करते हैं, इस समय शिवबाबा बॉम्बे में हैं अथवा मधुबन में हैं। यह अभी समझाया है। हर एक की आत्मा रथी है इस रथ का। साकार शरीर को रथ कहा जाता। आत्मा रथी ... अपना–2 पार्ट बजा रहे हैं। यह बातें सन्यासी आदि कोई भी नहीं जानते। तुम बच्चे ही जानते हो– हमारी आत्मा रथी हैं और प०पि० परम+आत्मा भी इस तन के रथी हैं। उनको कहा जाता– परम+आत्मा। है तो आत्मा न! परमपिता बाप कह फिर परम+आत्मा माना परमात्मा कहा जाता है। वह सदैव परे ते परे रहने वाला है। भगवान को जब याद करते हैं तो नज़र ज़रूर ऊपर ही जावेगी– ओह! प०पि०प० रहम करो। अपन को पता है कि वह ऊपर में रहने वाला बाप, अब अपने मुकर्रर किए रथ में आए हैं। कहते हैं– कल्प–2 में इसमें रथी बनता हूँ; क्योंकि इस ब्रह्मा मुख द्वारा ब्राह्मण कुल स्थापन करता है। अगर कृष्ण के तन में आवें तो फिर दैवी कुल हो जाए, सतयुग की बात हो जाए। कृष्ण का शरीर सतयुग में होता है। बच्चे समझते हैं, हमको बेहद का बाप बैठ तीन कालों का ज्ञान दे त्रिकालदर्शी बनाय रहे हैं, ड्रामा की आदि–मध्य–अंत का राज़ बताय रहे हैं। जो–2 घड़ी बीत चुकी है फिर हूबहू वह ही रिपीट करेगी। जैसे ल०ना० का राज्य था, फिर रिपीट होगा। क्राइस्ट को भी अपना पार्ट रिपीट करना है। फिर उस ही नाम,रूप,देश,काल में आने वाले हैं। बाप कहते हैं, मैं भी अपना निराकार रूप बदल अब साकार में आया हूँ। ज़रूर मनुष्य तन में आवेंगे तब तो सुनावेंगे न! गधे में थोड़े ही आवेंगे। शास्त्रों में तो मच्छ–कच्छ अवतार लिख दिया है। सर्वव्यापी के ज्ञान से मनुष्यों ने समझ लिया है कि वह सबमें प्रवेश है। अब बाप स्वयं समझाते हैं– सजनियाँ! मैं आया हूँ तुमको जगाने, नई दुनिया स्थापन करने। जो सतयुग में था, वह अब फिर रिपीट होगा। अब नवयुग आना है। दुनिया तो समझती है, नवयुग आने में अजुन 40 हज़ार वर्ष पड़े हैं। यह मनुष्यों की भूल है। तुम बच्चे अब निश्चय बुद्धि हो गए हैं। यह सब बातें हैं बिल्कुल नहीं। नई दुनिया के लिए ज़रूर नया ज्ञान देना पड़े। सतयुग में ही देवताएँ होंगे। और धर्मों का वहाँ पता भी न रहेगा। अभी और सभी पुराने धर्म हैं, नया (देवी–देवताओं) का गुम हो गया है। फिर उस नए धर्म की स्थापना होती है। देवताओं के कुछ न कुछ चित्र हैं। समझते हैं, सतयुग में बरोबर राज्य करते थे। वहाँ तुमको यह पता नहीं रहेगा कि ल०ना० के राज्य बाद कोई राम का राज्य होने वाला है। नहीं, कुछ भी पता न पड़ेगा। जो होता जावेगा, वह तुम देखते जावेंगे। फिर कहेंगे, एडवर्ड दी फर्स्ट, एडवर्ड दी सेकण्ड। थर्ड नम्बर वाले को मालूम रहेगा, फर्स्ट–सेकण्ड एडवर्ड हो गए हैं। आगे क्या होगा, वह नहीं जानेंगे। ड्रामा का पार्ट इमर्ज होता रहेगा। यह ड्रामा की नॉलेज बाप ही बैठ बतलाते हैं। वह भक्तिमार्ग के तीर्थ यात्रा की डिगरियाँ बिल्कुल न्यारी हैं। यह है ज्ञान। बाप और वर्से को याद करना है। अभी तुम बच्चे जानते हो, सतयुग में इतना समय राज्य होगा, फिर त्रेता में रा०सी० राज्य करेंगे। बच्चों को वह सीन–सीनरियाँ देखने में आती हैं। तो जानते हो, हमने 84 जन्मों का पार्ट बजाया है। यह नॉलेज बुद्धि में है। यह

हैं नई बातें। बाप तो कहते हैं मैं कल्प के संगमयुग पर आता हूँ। पुराने युग और नए युग के बीच को संगम कहा जाता है। इस संगम पर ही प०पि०प० आए रथी बना है। हम रथियों (आत्माओं) को ले जाने आया है। हम आत्माएँ भी रथी हैं ना! अपन को आत्मा समझना है। तुम बच्चे घड़ी–2 यह भूल जाते हैं। हम आत्माओं ने 84 जन्म पार्ट बजाया है। अब बाबा आए हमको सारा राज़ समझाते हैं। पतित से आप समान पावन बनाते हैं। यह बेहद का एक ही बाप है, जो बच्चों को आप समान बनाते हैं। लौकिक बाप कभी बच्चों को आप समान नहीं बनाते। एक ही बाप के बच्चे कोई वांढ़ा होगा, कोई सर्जन होगा, कोई इंजीनियर होगा। यहाँ ऐसे नहीं है। यहाँ तो तुम सब मनुष्य से देवता बनते हो। तुम तो (बैरिस्टर), सर्जन आदि नहीं बनते हो। जानते हो, प०पि०प० हमको पढ़ाते हैं, जिससे हम पढ़कर हम सो देवता बनते हैं। ऐसा हर एक ऐसे कहेंगे। ऐसा स्कूल कहाँ भी नहीं होगा जो सब कहें कि सो देवता पद प्राप्त करने पढ़ रहे हैं। दिन–प्रतिदिन वृद्धि को पाते रहेंगे। फिर मकान भी वृद्धि को पाते जावेंगे। बच्चों का प्रभाव निकलेगा तो फिर बहुत बुलावेंगे– यहाँ आए हमको मनुष्य से देवता बनने राजयोग सिखाओ। फिर वृद्धि होती जावेगी। बाप फिर भी बच्चों को कहते हैं, रात को अथवा अमृतवेले जागो। इसमें बहुत कमाई है। मनुष्य, जो बहुत कमाई करने के शौकीन होते हैं, उनको रात को भी ग्राहक मिल जाते हैं, तो जागते हैं। मनुष्य को सम्पत्ति 24 घण्टे मिलती जाए तो अपनी नींद भी फिटाय देते हैं कमाई में। फिर नींद आती ही नहीं। कमाई न होती तो उबासी, नींद आदि आती है। कमाई में बड़ी खुशी होती है। पैसा बढ़ाने का ही मनुष्य प्रयत्न करते हैं कि हम सुखी रहें। बाकी पेट तो एक ही खाता है। जास्ती खाने से तो और ही बीमार पड़ जाए। पेट एक पाँव रोटी माँगता है। तुम बच्चों को इस दुनिया में ममत्व न रखना चाहिए। पेट सुखाला मिलता रहे, बस। ऐसे नहीं, जास्ती लोभ में जावें और उसमें बुद्धियोग भागता रहे, उस अविनाशी कमाई से वंचित हो जावें। नहीं। इस कमाई का बहुत–2 ख्याल करना है। तुम्हारी कमाई सेकेण्ड बाई सेकेण्ड है। अगर चलते–फिरते बाप को याद करो तो बहुत सहज है। कमाई बहुत भारी है। और कमाइयाँ ऐसे चलते–फिरते, उठते–बैठते भी होती है। यह वण्डरफुल कमाई है! इंडिपेन्डेन्ट अपने लिए अपनी कमाई करते हैं। लौकिक बाप को बच्चों का ख्याल रहता है– बच्चे सुखी रहे, खाते रहे। इसमें बाल–बच्चों का ख्याल नहीं रहता। अपने लिए 21 जन्मों की कमाई करे, कैसा मज़े का ज्ञान है! हर एक बच्चे को अपने लिए कमाई करनी है। बाल–बच्चों, मित्र–संबंधियों आदि किसको भी याद न करना है। इस देह को भी याद न करना है। बाबा को भल इस देह में आना पड़ता है; परन्तु है तो देही–अभिमानी न। इस समय देह में आते हैं, आय कर तुम आत्माओं को नॉलेज देते हैं अथवा सहज कमाई का रास्ता बताते हैं। अगर तुम प्रैक्टिस करते रहो तो तुम बहुत कमाई कर सकते हो। बाबा भी प्रैक्टिस करते हैं। बाप को याद करने की हेर पड़ गई है। अपन को भूल शिवबाबा ही याद रहता है; क्योंकि शिवबाबा की इसमें प्रवेशता है न! यह (बाबा) समझते हैं, मैं ब्रह्माण्ड का मालिक हूँ। लौकिक बाप के बच्चों को रहता है न– हम बाप की मिल्कियत का हकदार हैं। तो इस बाबा (ब्रह्मा) को यह रहता है, मैं तो ब्रह्माण्ड का मालिक हूँ। बाबा की प्रवेशता है न, तो वह नशा रहता है– हम ब्रह्माण्ड का मालिक है, प्रॉपर्टी का मालिक है। शिवबाबा खुद तो विश्व का मालिक नहीं बनते। मैं ब्रह्माण्ड का भी मालिक तो विश्व का भी मालिक बनता हूँ। बाबा सिर्फ ब्रह्माण्ड का मालिक, मैं विश्व का भी मालिक (हूँ)। तुम भी विश्व के मालिक बनते हो न। राजा चाहे प्रजा, यह तो सब समझते हैं– हम स्वर्ग के मालिक हैं। ऐसा पुरुषार्थ

करना है; जैसे बाबा को नशा रहता है– हम ब्रह्माण्ड (के मालिक) हैं। अभी जैसे कि हैं। जान गए हैं, हम विश्व के मालिक हैं। यह समझने से भी खुशी का पारा बहुत अच्छा चढ़ा रहेगा। गाया भी जाता (है)– अति इन्द्रिय सुख गोपी वल्लभ की गोप–गोपिकाओं से पूछो। ऐसे नहीं कि गोप वल्लभ से पूछो। वल्लभ बा(प) को कहा जाता है। वल्लभ को तो विश्व के मालिकपने का सुख तो पान(ा) नहीं है। बाप कितना बच्चों को उठाते हैं। यह कहते हैं, मैं भी अपन को ब्रह्माण्ड का मालिक समझता हूँ। सारी दुनिया में यह कोई समझ न सके– मैं ब्रह्माण्ड का मालिक हूँ। ऐसे नहीं, ब्रह्म में लीन हो जाऊँगा। कहाँ लीन हो जाना, कहाँ ब्रह्माण्ड का मालिक अपन को समझना– बहुत फर्क है! तुम जानते हो, बाबा हमको विश्व का मालिक बनाते हैं। खुद बाप समझाते हैं, सजनियाँ जागो। हर एक बात तुमको नई ते नई समझाता हूँ। बुढ़ियों के लिए यह भी तो बहुत सहज है। क्या तुम ब्रह्माण्ड के मालिक नहीं थे? थे। फिर पार्ट बजाया। अब फिर तुम ब्रह्माण्ड के मालिक बनते हो। फिर विश्व के मालिक बनने वाले हो। यह याद स्थायी रखनी है। इसको कहा जाता है विचार–सागर–मंथन। तो तुमको खुशी का पारा बहुत चढ़े। यह तो निश्चय करना चाहिए, बाप है। बाप के सिवाय यह कोई समझाय न सके। दिल में सब नोट करना चाहिए। स्थूल में लिखने की दरकार नहीं। बाकी हाँ, यह नोट्स लेते हैं तो स्मृति में रखने लिए। फिर यह काम में न आवेंगे। बैरिस्टर के पास यह बहुत किताब आदि रहते हैं। शरीर छूटा, खलास। पता नहीं, दूसरे जन्म में क्या बनेंगे! तुम बच्चों की तो एक ही पढ़ाई है। तुम जानते हो ब्रह्माण्ड का मालिक, हमको ब्रह्माण्ड और विश्व का मालिक बनाते हैं। खुशी का पारा क्यों नहीं चढ़ता! बाबा ने समझाया है, प्रीत भी घर में अपन को रिफ्रेश करने रखना चाहिए। मनुष्य समझते हैं, ज्ञान में जाने से हमको घाटा पड़ा है। यह क्यों? अरे, यह घाटा–बाधा तो पुरानी दुनिया में है ही। आज कोई वज़ीर है, कल को कोई ने शूट किया तो खेल खलास। सबको घाटा पड़ता ही रहता है। दबी रहे धूल में, किसकी राजा खाए– सबको घाटा है। सिर्फ तुम बच्चों को भविष्य के लिए सदैव फायदा है, सो भी 21 जन्मों के लिए। बाकी सब घाटे में हैं। यह तो सब रुण्ज के पानी मिसल खड़े हैं। उनको पता नहीं है, यह सब कुछ मिट्टी में मिल जाना है। सब कब्रदाखिल अथवा भस्मीभूत पड़े हैं– यह तुम ही जानते हो। तुम्हारे में भी जो बहुत होशियार हैं, उनको पता है कि यह दुनिया जैसे ..... पड़ी है। सब कब्रदाखिल हो जावेंगे। यादव–कौरव सब कब्रदाखिल हुए थे, बाकी पांडवों की विजय हुई। विश्व पर अर्थात् नई दुनिया पर विजय पाई; क्योंकि तुम पांडव ईश्वर को जानते हो, उनसे प्रीत रखते हो। जितना जो प्रीत रखते हैं, जितना याद करते हैं, उतनी कमाई करते हैं। याद से कमाई होती है– ऐसा कब सुना? भारत का प्राचीन योग बहुत नामी–ग्रामी है। यह बाबा भी नहीं जानता था। अब सब बातों की रोशनी आ गई है बुद्धि में। बाप कहते हैं, यह सृष्टि के आदि–मध्य–अंत का ज्ञान जो अब तुमको सुनाता हूँ, सतयुग में न रहेगा। वहाँ तो तुम्हारी प्रालब्ध का, सुख का पार्ट, जो कल्प पहले चला था, वह ही चलेगा। यह ज्ञान भी बाप एक ही बार आकर देते हैं। अंत तक देते रहेंगे। तुम भल कहाँ भी हो, शरीर छूटे; परन्तु शिवबाबा याद हो और ज्ञान अमृत मुख में हो, स्वदर्शनचक्र याद हो तब प्राण तन से निकले। कहाँ वह भक्तिमार्ग की कहावत, कहाँ यह ज्ञान की बातें! शिवबाबा की याद हो, त्रिकालदर्शीपन का ज्ञान हो व स्वदर्शनचक्र बुद्धि में याद हो तब प्राण तन से निकले। मनुष्य जब मरने पर होते हैं तो हाथ में माला देते हैं। कहते हैं, राम–2 कहो तो अंत में सद्गति हो जावेगी; परन्तु राम है कौन? कहाँ है? कुछ भी नहीं जानते। कोई अपने गुरु को याद करते, कोई हनुमान को याद करते। अनेकों को याद करना, इसको भक्तिमार्ग कहा जाता है। अभी तुम एक को याद करते हो। वह है

... तुमको यह ज्ञान देते हैं। यह नॉलेज और ..... जानते, जबकि नम्बरवन ल०ना० जो अब 84 अंतिम जन्म में हैं, इनको ही भूल गया है। इनको ही सृष्टि के आदि–मध्य–अंत का ज्ञान नहीं, तो उनका जो मनुष्य सृष्टि का सिजरा हो(है), तो उनको फिर कहाँ से मिलेगा! कोई में भी यह नॉलेज होती तो सीखते–जानते होते। तो लिखते– कल्प 5000 वर्ष का है। मनुष्यों की तो अनेक मत हैं। यहाँ तो एक ही बाप समझाते हैं– कल्प में चार युग हैं। जगन्नाथ पर चावल की हुण्डी में भी चार भाग हो जाते हैं। यह दृष्टांत मात्र है। बरोबर चार भाग हैं भी इक्वल। हर एक युग को 1250 वर्ष देते हैं। तुम बच्चे यथार्थ रीति जानते हो। श्री कृष्ण के राज्य को तुम द्वापर में नहीं ले जावेंगे। राधे–कृ० हैं ही सतयुग में, जो स्वयंवर बाद ल०ना० बनते हैं। शास्त्रों में यह नहीं दिखाया है– रा०कृ० आपस में कौन हैं। कोई स्त्री–पुरुष तो नहीं थे। वह प्रिन्सेज़ अपने घर से आती है बगीचे में मिलने। तो ज़रूर और घर की होगी। फिर ज़रूर शादी की होगी। राज है ही ल०ना० का। तुम बनते भी हो नर से ना०, नारी से ल०। शास्त्र में तो बहुत उल्टी बातें हैं। बाप समझाते हैं– बच्चे, यह भूलो मत। बाबा तो नशा चढ़ाने अर्थ बहुत ज्ञान अमृत पिलाते हैं। फिर पीने वाले कोई तो जाकर विचार–सागर–मंथन करते हैं, कोई तो वहाँ ही भूल जाते हैं। विचार करना चाहिए– आज बाबा ने क्या सुनाया। बरोबर हम ब्रह्माण्ड के मालिक, निर्वाणधाम के हम मालिक हैं, फिर विश्व के मालिक बनेंगे। बाबा हमको मालिक बनाय रहे हैं। बाप कहते हैं– बच्चों, मूँझो नहीं। तुमको हैरान भी बहुत करेंगे; क्योंकि नई बात है। विघ्न पड़ते हैं। बाप कहते हैं, मैं शिव रुद्र हूँ। मेरे इस रुद्र ज्ञानयज्ञ में तुम अबलाओं पर अथवा यज्ञ में अनेक प्रकार के विघ्न पड़ेंगे। दुर्योधन, द्रौपदियों को नग्न करेंगे, मारेंगे। यह है ही नर्क। तुम जानते हो, हम ब्रह्माण्ड के मालिक बनेंगे, फिर स्वर्ग में जावेंगे। कितना सहज है! तुम नहीं समझते हो। ड्रामा अब पूरा होता है। अब हमको गुलगुल बनकर जाना है। पतित को गुलगुल नहीं कहेंगे। आयरन एज को छीः–2 कहेंगे। गोरे से साँवरा बनने में कितना समय लगता है? त्रेता तक ही 2 कला कम हो जाती है, फिर दूसरे युग में दो कला कम, गिरना है ज़रूर। कितना भी कोई माथा मारे, द्वापर से ऊपर जाए ही नहीं सकते। अब तो सबकी कलाएँ खत्म हो पड़ी हैं। फिर तमोप्रधान से सतोप्रधान न(मैं) बनाता है(हूँ)। तुम पुरुषार्थ करते हो– हम यह शरीर छोड़ बाबा के पास जावे। इसमें तो खुशी होनी चाहिए। पुराने तन से ममत्व मिट जावे। यहाँ कहेंगे, पुरानी खल हुई है, इसको छोड़ते हैं। सतयुग में ऐसे नहीं कहेंगे। वहाँ कहेंगे, अभी बूढ़े हुए हैं, फिर जाए बच्चा बनते हैं। अब बाप कहते हैं, अपन को ब्रह्माण्ड का मालिक, विश्व का मालिक समझो; क्योंकि उस बाप के तुम बच्चे हो। जीव आत्माएँ ही मिलकर वर्सा पाय रहे हैं। यह बाबा भी वर्सा पाय रहा है। इसमें शक्ति की तो कोई बात नहीं। बाबा ब्रह्माण्ड का मालिक है। इनको ही सब याद करते हैं– बाबा, हम तंग हो गए हैं, अब आपके पास आए। बाबा कहते हैं– तुम आय न सकते हो; क्योंकि माया ने तुम्हारे पर काट दिए हैं। अब योगबल से तुमको पर मिलेंगे तो उड़ जावेंगे। यह है प्राचीन योग और नॉलेज त्रिकालदर्शीपने का। अच्छा।

चेम्बूर :– सतयुग में पान खाते होंगे? कृष्ण के मंदिर में, ल०ना० के मंदिर में पान क्यों रखते हैं? वल्लभाचारी भी बहुत पान खाते हैं। पान है अच्छी चीज़; परन्तु आजकल तो तम्बाकू आदि क्या–2 डालते हैं। वहाँ तो फर्स्ट क्लास खुशबूदार होंगे। मंदिरों में (फूल) रखते हैं, कोई कारण तो होगा न! निराकार बाप, निराकार (हमजिन्म) आत्माओं से बात करते हैं। निराकार की हमजिन्स निराकार, साकार की हमजिन्स साकार। तो निराकार बाप आत्माओं को कहते हैं– मीठे, सिकीलधे, लाडले बच्चे! तुम आत्मा ने शरीर लेते–छोड़ते 84 जन्म पूरे किए हैं। अब मैं तुमको लेने आया हूँ। साजन लेने जाते हैं न! अच्छा, मीठे–2, सिकीलधे बच्चों प्रति नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार, यादप्यार और गुडमॉर्निंग।